RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 7 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 29 अप्रैल, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत्

1960853119 दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक

शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 7, 26-29 अप्रैल 2018 तदनुसार 16 वैसाख सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

विष्णु के परमपद में अमृत का कूप

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः।।

–ऋ. १।१५४।५

शब्दार्थ–अस्य = इस सर्वव्यापक के **तत्** = उस **प्रियम्** = प्रिय, अभीष्ट **पाथः** = अन्न को मैं **अभि+अश्याम्** = सर्वथा खाऊँ **देवयवः** = भगवद्भक्त भगवान् के अभिलाषी **नरः** = मनुष्य **यत्र** = जिसमें **मदन्ति** = आनन्दित होते हैं, मस्त होते हैं **हि** = सचमुच **सः** = वह मनुष्य **उरुक्रमस्य** = महापराक्रमी, विशाल सृष्टि के रचयिता का, **इत्था** = इसी भाँति **बन्धुः** = बन्धु हो सकता है। **विष्णोः** = विष्णु के **परमे** = परम **पदे** = पद में **मध्वः** = मधु का, अमृत का **उत्सः** = कूप, स्त्रोत है।

व्याख्या–एक आस्तिक जब भगवत्प्रेमियों, भगवान् के भक्तों को आनन्दविभोर देखता है, तो उसे विचार आता है कि ये लोग कैसे मस्त हैं? मैं भी उस मस्ती को प्राप्त करूँ। जो अन्न इन्होंने खाया है, मैं भी खाऊँ–**'तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति'** = जिसके कारण से देवभक्त मनुष्य आनन्दित होते हैं, मैं भी उस प्रिय अन्न को खाऊँ। इन्हें वह अन्न कहाँ से मिला ? भगवान् से। क्योंकि–

'विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः' [ऋ० ३।५५।१०] = रक्षक भगवान् उस सर्वश्रेष्ठ अन्न और प्रिय स्थानों की रक्षा करता है और अमृत=मुक्ति देता है। चूँकि इस प्रिय परम पाथ की रक्षा भगवान् करता है, अतः–**'सचेतसो अभ्यर्चन्त्यत्र'** [ऋ० १०।१।३] = समझदार लोग इसके लिए भगवान् की अर्चा=पूजा करते हैं।

जो यह भली–भाँति समझ ले कि भगवान् ही उस परम प्रिय अन्न का रक्षक है और वह भगवान् की आराधना में लग जाए, तो–**'उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था'** = वह सचमुच महापराक्रमेश्वर सर्वव्यापक भगवान् का बन्धु बन जाता है। विष्णु का बन्धु बनने से उसे भी आनन्द मिलने लगता है, क्योंकि **'विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः'** = विष्णु के परमपद में अमृत का कूप है। इसीलिए–

'तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्' [ऋ० १।२२।२०] = ज्ञानी जन विष्णु के उस परमपद को आकाश में फैले प्रकाश की भाँति सदा देखते हैं। देखकर ही नहीं रह जाते, वरन्–

'तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्' [ऋ० १।२२।२१] = स्तुतिकुशल, जागरूक, सावधान, बुद्धिमान्, विद्वान् उसको [अपने हृदय में] सदा प्रदीप्त करते हैं, जो विष्णु का परमपद है, अर्थात् पहले उसका ज्ञान प्राप्त करते हैं और फिर उसको हृदय में स्थान देते हैं। प्रभो! हमें भी अपना परमपद दिखला। हमें भी उस अमृत–कूप का मधुर जल पिला। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

आगामी आर्य महासम्मेलन बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन **11 नवम्बर 2018** को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। इसलिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वह इन तिथियों में अपनी अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुट जाएं। आपके सहयोग से इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलन कर चुकी है। आशा है इस आर्य महासम्मेलन में भी आप का पूरा पूरा सहयोग मिलेगा।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात्पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः।
आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः।।

–ऋ० ८.३१.१६

भावार्थ–हे कृपासिन्धो परमात्मन्! पीछे से, नीचे से, ऊपर से, आगे से और सब दिशाओं से हमारी सब प्रकार सदा रक्षा करें। अग्नि, बिजली आदि होने वाले आधिदैविक भय से और चिन्ता ज्वरादि से होने वाले आध्यात्मिक भय सिंह, सर्प, चोर, डाकू, राक्षस, पिशाचादिकों से होने वाले, अनेक प्रकार के आधिभौतिक भय, हम से दूर हटावें, जिससे हम निर्भय होकर आप जगत्पिता की भक्ति में और आपकी वैदिक ज्ञान के प्रचार की आज्ञापालन में सदा तत्पर रहें।

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रमूतये।।

–ऋ० १.३०.७

भावार्थ–हे मित्रो! सब कार्यों के और सब युद्धों के आरम्भ में, अति बलवान् इन्द्र की, अपनी रक्षा के लिए हम सब लोग प्रेम से प्रार्थना करते हैं, जिससे हमारे सब कार्य निर्विघ्नतया पूर्ण हों। हमारे मन में ही जो सदा देवासुर संग्राम बना रहता है, सात्त्विक दैवी गुण, अपनी विजय चाहते हैं और तामसी राक्षसी गुण, अपनी विजय चाहते हैं। उनमें तामसी गुणों की पराजय हो कर, हमारे दैवी गुणों की विजय हो, जिससे हम इस आभ्यन्तर युद्ध में विजयी होकर इस लोक और परलोक में सदा सुखी रहें।

वैदिक धर्म ही मानव धर्म है।

ले.-स्वामी वेदानन्द सरस्वती-उत्तरकाशी

वैदिक प्रार्थना है-

असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

हे ईश्वर! हमें असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से छुड़ा के अमृत की ओर ले चलो।

यह प्रार्थना किसी वर्ग विशेष या सम्प्रदाय की नहीं है। आर्य-अनार्य, हिन्दु, मुस्लिम, कम्युनिस्ट या सोशलिस्ट सभी हृदय से सत्य को जानते हैं। सब लोगों की आखें प्रकाश पसन्द करती हैं। मौत से तो मानव ही नहीं प्राणी-मात्र भय भीत है। ज्योंति के अभाव में आदमी रस्सी को भी सांप समझ लेता है, और सद-ज्ञान के अभाव में विष को भी अमृत समझ कर पी जाता है। इसलिए वेद कहता है-(ज्योतिष्मत: पथो रक्ष धिया कृतान्)। अर्थात्-बुद्धिमान पुरुषों द्वारा बनाये गये ज्योतिर्मय पथों की रक्षा करो। रास्ते यदि टूट गये तो दोबारा बनाने में समय, श्रम, शक्ति और अर्थ का अपव्यय होगा, और सद-ज्ञान लुप्त हो गया तो सत्य पथ सदा के लिए लुप्त हो जाऐंगे। सत्य पथ ही न रहेंगे, तो मानव का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा।

आज विश्व में जनसंख्या की समस्या एक विकट समस्या बनी हुई है, लेकिन इस विशाल भीड़ में इन्सानियत खो गई और शैतानियत बढ़ रही है। शैतान के आतंक से बड़े-बड़े राष्ट्र भयभीत हैं। शैतान के पास इस धरती की सात अरब जनसंख्या ही नहीं, सत्तर अरब जनसंख्या को भी नष्ट करने की आण्विक शक्ति है। इन्सानियत की रक्षा करनी है तो निश्चय से हमें मानव धर्म पर विचार करना होगा, क्योंकि (धारणात् धर्मो इत्याहु: धर्मोधारयति प्रजा:)अर्थात्-धर्म युक्त व्यवहार ही मानवता की रक्षा का उपाय है। आज की दुनियाँ में धर्म के नाम पर जो अनेकों मजहब खड़े हैं उन्होंने मानव-मानव के बीच प्रेम के स्थान पर द्वेष और शान्ति के स्थान पर युद्ध कराये हैं। चाणक्य-(सुखस्य मूलं धर्म:) सुख का मूल धर्म को बतलाते हैं। कणाद तो उससे और आगे बढ़ कर कहते हैं कि इस लोक के ही नहीं परलोक के सुखों की प्राप्ति भी धर्म से ही होती है। (यतोऽभ्युदयनिश्श्रेयस्सिद्धि स धर्म:) व्यक्तिगत विश्वास या मजहब उनका नाम धर्म नहीं है। धर्म तो एक जीवन-विज्ञान है। जैसे दुनियां का हर आदमी आँख से देखता है, कान से सुनता है। जो बिना देखे चलेगा, वह राम हो या रहीम, ठोकर खायेगा। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न आदमियों के लिये सत्य दो नहीं हो सकते। सत्य को स्वीकार करना ही धर्म है। व्यक्ति स्वयं तो सत्य को जानना चाहता है, किन्तु दूसरे से उसे छिपाना चाहता है। व्यास जी कहते है-

श्रूयताम् धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

केवल और केवल मानव इस सत्य को स्वीकार कर ले कि अपनी आत्मा के प्रतिकूल आचरण मैं अन्यों के लिये नहीं करूंगा, तो धरती पर स्वर्ग आ जायेगा। वैदिक धर्म में पांच यम-**अंहिसासत्यास्तेय-ब्रह्मचर्या-परिग्रहा:** बतलाये हैं। जिनके विषय में कहा है-**यमा: परार्थरक्षार्थम्।** दूसरो के हितों की रक्षा यम पालन के बिना नहीं हो सकती। जिस व्यक्ति को तनिक सा एक कांटा परेशान कर देता हैं, वह अपना पेट भरने के लिये दूसरे जीवों की गर्दन पर आरा चलाने में भय संकोच नहीं करता। मानव के मांसाहार ने निरपराध जीवों पर कहर ढाया है। मानव-मानव के खून का भी प्यासा हो रहा है। धरती पर शान्ति एक-धर्मता से होगी। धर्म कभी दो नहीं हो सकते। दो होगें तो वे शान्ति से नहीं रह सकते।

धर्म शब्द के अर्थ का संकोच:

पौराणिक युग में धर्म शब्द के अर्थ का बहुत संकोच हुआ है। हिन्दुओं ने मन्दिर में जाकर मूर्तियों के सामने धूप-दीप करना, फूल-पत्ते चढ़ाना, व्रत उपवास, पूजा-पाठ कर लेना तथा मुस्लिम लोगों में रोजे नमाज को ही धर्म समझ लिया। वस्तुत: यह धर्म नहीं है। मनु महाराज ने धर्म की विशद व्याख्या की है।

उन्होंने मानव-धर्म के १० लक्षण बताये हैं:

धृति: क्षमा दमोऽस्तेयम् शौच मिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

यह सार्वभौमिक-धर्म का स्वरूप है। इसमें किसी सम्प्रदाय की गन्ध मात्र भी नहीं है।

याद रखिये धार्मिक आदमी की पहचान यह नहीं है कि वह मंदिर, मस्जिद और गिरिजाघरों के चक्कर लगाये और नित्य गीता, कुरान-शरीफ या बाइबिल का पाठ करे। अपितु लोक हित का ध्यान रखते हुये सत्य का अनुष्ठान ही उसकी पहचान है। धर्म के ठेकेदार चाहे हिन्दू हों, मुस्लिम हों, या ईसाई, वे न तो धर्म को जानते हैं और न ईश्वर को। हाँ, वे आदमी की कमजोरियों को खूब जानते हैं और उसी से लाभ उठाकर वे मानव का शोषण करते हैं। मानव की सबसे बड़ी कमजोरी उसका अज्ञान है। अज्ञान से ही भय, लोभ, मोह आदि पैदा होते हैं। पुजारी मनुष्य को ईश्वर व नरक का भय दिखाता है। स्वर्ग आदि सुखों का लालच देता है। आदमी उनके जाल में फंस जाता है। वेद-ज्ञान ही व्यक्ति के अज्ञान की चिकित्सा करके उसे सब कमजोरियों से मुक्ति दिला सकता है। जब लोग वैदिक धर्म के अनुसार जीवन जीते थे, तब-व्यास जी के शब्द में-

नैव राज्यं न राजासीत् न दण्डो न च दाण्डिक:।
धर्मेणैव प्रजा: सर्वा रक्षन्ति च परस्परम्।।

धर्मयुग का यह कैसा मनमोहक वर्णन है। न राज्य की कोई सीमायें थी। न कोई राजा था। न दण्ड की आवश्यकता थी और न दण्डदाता की, क्योंकि सभी धर्मानुसार जीवन जीते हुए परस्पर एक दूसरे की रक्षा करते थे। चरक ने लिखा है कि त्रेतायुग में लोभ के कारण लोगों में जब आपसी द्रोह बढ़ गये तो वे असत्य भाषण करने लगे। उससे धर्म का एक पाद क्षीण हो गया। बलवान् निर्बल को सताने लगे। तब प्रजा ने उस मत्स्य न्याय से अभिभूत होकर वैवस्वत् मनु को अपना राजा स्वीकार किया। एक रोज लोक धर्म की जिज्ञासा से ऋषिलोग मनु महाराज के चरणों में उपस्थित हुये, और उनसे धर्मोपदेश के लिए प्रार्थना की। तब मनु महाराज उन्हें उपदेश करते हुये बोले-

वर्णाश्रमात्मके धर्मे सर्वधर्मस्य संग्रह:।
अनेनैव हि धर्मेण भवेल्लोकस्य धारणम्।।

अर्थात् वर्णाश्रम धर्म में सब धर्मों का संग्रह हो जाता है। इसी से सारी प्रजा की रक्षा होती है।

आचार्य चाणक्य भी इस वर्णाश्रम धर्म के विषय में कहते हैं-

व्यवस्थित आर्य मर्यादा कृत वर्णाश्रम स्थिति:।
तया हि रक्षितो लोक: प्रसीदति न सीदति।।

अर्थात् आर्य मर्यादा के अनुसार वर्णाश्रम धर्म की जो व्यवस्था है, उससे रक्षित होकर प्रजा सदा सुखी रहती है और उसे कभी कोई कष्ट नहीं होता।

भारत में ही जन्मे जो लोग वर्ण व्यवस्था की निन्दा करते हैं, उनका अध्ययन और अनुभव अल्प है। यूनान देश में सबसे प्रथम प्लेटो ने एक राजनीति पर शास्त्र लिखा था। इंग्लैण्ड के प्रो० ई० जे० आर्विक ने उस विषय पर एक खोज पूर्ण ग्रन्थ १९२० में लन्दन से प्रकाशित कराया था। जिसका नाम है-The message of Plateau: A Relinterpretation of the Republic. अपनी पुस्तक में लेखक लिखता हैं-The Republic is based largely upon ancient Indian Social Phiosophy. अर्थात् प्लेटो का प्रजातन्त्र नामक ग्रन्थ प्राचीन भारतीय वर्णाश्रम मर्यादा पर आश्रित है। जिस वर्णाश्रम व्यवस्था को आज कुछ लोग मिटा देना चाहते हैं, उसी पर प्लेटो के ग्रन्थ का आधार है। सत्य है, अज्ञान में आदमी अपना हित भी नहीं देख पाता।

मानव धर्म का मूल मनु महाराज वेद को मानते हैं। (वेदोऽखिलो-धर्ममूलम्) वेद के निन्दक को वे नास्तिक कहते हैं। (नास्तिको वेद निन्दक:) जो वेद ज्ञान का अपमान करता है, उसे समाज से बहिष्कृत कर देना चाहिये। (ससाधुभिर्बहिष्कार्य:) वर्ण व्यवस्था में-

विप्राणां ज्ञानतोज्यैष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यत:।
वैश्यानां धनधान्यत: शूद्राणामेव जन्मत:।।

अर्थात् ब्राह्मण को ज्ञान से, क्षत्रिय को बल-पुरूषार्थ से, वैश्य को धन से और केवल शूद्र को ही आयु से बड़ा मानना चाहिये।

वेदवित् आत्मसंयमी ब्राह्मण राष्ट्र का आधार होता है। धन लोलुप ब्राह्मण विनाश को प्राप्त होता है। वेद

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

बेटी बचाओ, बेटी पढाओ को महज नारे से आगे ले जाने की जरूरत

बेटियां गर्भ से बाहर आएं, दुनियां देखें, हंसे-खिलखिलाएं , शिक्षित हों और आगे बढ़ें। इसके लिए देश में कई वर्षों से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान चल रहा है। गांव- गांव में अभिभावकों ने बेटियों को स्कूल भेजना शुरू कर दिया है लेकिन उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे बड़े राज्यों की बजाय सिक्किम, मेघालय, केरल, हिमाचल प्रदेश आदि छोटे राज्यों की बढ़ती साक्षरता दर दर्शाती है कि कैसे यहां का प्रगतिशील समाज लड़कियों को आगे बढ़ने का अवसर दे रहा है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के अदिति महाविद्यालय में भूगोल की एसोसिएट प्रोफेसर और ओडिशा निवासी पुण्यातोया पात्रा कहती हैं कि उत्तर पूर्व का समाज सदियों से स्त्रियों को ऊंचा दर्जा देता आया है। वहां दहेज प्रथा, सती प्रथा, भ्रूण हत्या का चलन नहीं है। आदिवासी बहुल क्षेत्र एवं देशज संस्कृति का प्रभाव भी स्त्रियों के पक्ष में रहा है। 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार जहां महिला पुरूष का राष्ट्रीय औसत 940-1000 है। वहीं उत्तर पूर्वी राज्यों में स्थिति इससे कहीं अधिक बेहतर है। दरअसल यहां के आदिम समुदायों में स्त्री और पुरूष दोनों समान रूप से श्रम करते हैं। स्त्री घर और बाहर के काम में बराबर की भागीदारी करती है। परिवार और कबीलाई पंचायत के स्तर पर किए जाने वाले फैसलों में स्त्री स्वर का सम्मान किया जाता है। यही कारण है कि लड़कियों की शिक्षा को शेष भारत की तुलना में उचित प्रोत्साहन मिलता है। उत्तर पूर्वी राज्यों में एक विशिष्ट बात यह भी है कि यहां बीते कई दशकों से महिलाओं की काम में भागीदारी यथावत बनी हुई है, जबकि देश के अन्य हिस्सों में घटी है। योजना आयोग की मानव विकास रिपोर्ट से पता चलता है कि इन राज्यों में लैंगिक असमानता में भी कमी आई है।

स्वास्थ्य व्यवस्था, वित्तीय संसाधनों पर अधिकार, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हिस्सेदारी के अलावा शैक्षिक स्तर का एक बड़ा मानक है जिससे समाज में स्त्रियों की स्थिति का आकलन किया जाता है। जिन राज्यों में महिला साक्षरता दर व उच्च शिक्षण संस्थानों में नामांकन की दर कम होती है, उससे पता चलता है कि वहां के समाज में स्त्रियों के खिलाफ कितना भेदभाव है। हालांकि उत्तर-पूर्वी राज्यों में साक्षर पुरूषों की संख्या महिलाओं से अधिक रही है, लेकिन राष्ट्रीय औसत से इनका अंतर यहां कम देखा गया है। विशेषकर मिजोरम, मेघालय एवं नागालैण्ड़ में। अरूणाचल प्रदेश एवं असम को छोड़ दें तो साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। पिछले कुछ वर्षों में स्थिति में अपेक्षाकृत बदलाव आया है। राष्ट्रपति पदक विजेता, दिल्ली स्थित भारती पब्लिक स्कूल की प्राचार्य सविता अरोड़ा की मानें तो उत्तर पूर्वी या अन्य छोटे राज्यों में शिक्षा की स्वीकार्यता एवं महत्व दोनों बढ़े हैं। इसके सहारे लड़कियां अन्य राज्यों की ओर पलायन कर, वहां अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही हैं। दूसरी ओर बिहार, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में शैक्षिक व्यवस्था चरमराई हुई है। स्कूल कॉलेजों में शिक्षक और बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं।

पश्चिम बंगाल से ताल्लुक रखने वाली और दिल्ली युनिवर्सिटी में जर्मन स्टडी की प्रोफेसर व डूटा की पूर्व अध्यक्ष शाश्वती मजूमदार का कहना है कि शैक्षणिक विकास के मामले में केरल लम्बे समय से उच्च स्थान पर रहा है। दो दशक पहले ही यूनेस्को के मानकों के मुताबिक, इसे पूर्ण साक्षर राज्य घोषित किया जा चुका है, लेकिन शेष भारत के शैक्षिक माहौल एवं स्तर में दिनों दिन गिरावट आ रही है। उच्च शिक्षा को छोड़ दें तो प्राथमिक शिक्षा का हाल भी बुरा है। सरकारी स्कूलों का ढ़ाचा ध्वस्त होने व निजी स्कूलों को जरूरत से अधिक प्रोत्साहन मिलने से शिक्षा के क्षेत्र में एक गहरी खाई बन गई है। उस पर से पितृसत्तात्मक समाज का लडकियों के प्रति रवैया उन्हें आत्मनिर्णय लेने से रोकता है। जो कुछेक मिसालें बनती हैं, उनमें उनका खुद का संघर्ष अधिक होता है। उत्तर-पूर्वी राज्यों में केरल के साथ ऐसा नहीं है। वहां के समाज में महिलाओं का प्रभाव है। इसलिए केरल आज महिला साक्षरता के मामले में देश का नंबर वन राज्य है। स्कूल ड्राप आऊट लगभग शून्य है। 2012 की आर्थिक जनगणना के बाद जारी की गई रिपोर्ट को देखें तो केरल के अलावा तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में महिला साक्षरता दर सबसे अधिक है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का यह अभियान देश के 161 जिलों में चल रहा है, फिर भी धरातल पर देखा जाए तो बेटियों के साथ भेदभाव देखने को मिलता है। देश की बेटी आज हर क्षेत्र में अपने माता-पिता तथा देश का नाम रोशन कर रही है। देश के लिए कई स्वर्णपदक जीतने के बावजूद भी आज हमारे समाज में बेटियों के साथ भेदभाव किया जाता है। आज भी कन्याओं की भ्रूण में ही हत्या कर दी जाती है। छोटी-छोटी बच्चियों के साथ बलात्कार की घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। आज बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के साथ-साथ लोगों की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। जब तक लोगों की पुरूष प्रधान मानसिकता को नहीं बदला जाएगा, तब तक इस स्थिति में सुधार नहीं किया जा सकता। इसके लिए सरकार को कड़े कानून बनाने चाहिए। इन कानूनों के तहत ऐसी सजा का प्रावधान हो, जिसके सोचने मात्र से रोंगटे खड़े हो जाएं। इस प्रकार समाज में बेटियों के साथ होने वाले भेदभाव को रोका जा सकता है।

दिनांक 21 अप्रैल 2018 को देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अध्यक्षता में कैबिनेट की मीटिंग में यह निर्णय लिया गया कि 12 वर्ष से छोटी बच्चियों के साथ बलात्कार करने वाले को फांसी की सजा दी जाएगी, 16 साल से छोटी लड़की से गैंगरेप पर उम्रकैद की सजा होगी, 16 साल से छोटी लड़की से रेप पर कम से कम 20 वर्ष की सजा होगी, सभी रेप केस में 6 महीने के भीतर फैसला सुनाना होगा, नए संशोधन के तहत रेप केस की जांच 2 महीने में पूरी करनी होगी, अग्रिम जमानत नहीं मिलेगी, महिला से रेप पर सजा 7 से बढ़कर 10 साल होगी। ये सभी ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं और हमें इनका स्वागत करना चाहिए। हम भारत सरकार के धन्यवादी हैं जिन्होंने बच्चियों एवं महिलाओं की सुरक्षा के लिए कड़ा कदम उठाया। छोटी-छोटी बच्चियों के साथ घृणित अपराध करने वालों को फांसी से भी कठोर सजा होनी चाहिए। समाज में बेटियों के साथ होने वाले किसी भी प्रकार के भेदभाव को बर्दाशत नहीं करना चाहिए। अपने परिवार में बेटी को बेटों के समान महत्व दें। उनके साथ शिक्षा में, रहन-सहन में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। हर माता-पिता अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए बेटियों के साथ होने वाले भेदभाव को दूर करने में अपना सहयोग दें। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जाति की दशा को देखते हुए उन्हें पुरूष के बराबर अधिकार दिलाने के लिए कार्य किया था। नारी पुरूष का मुकाबला तभी कर सकती है जब वह पुरूष के बराबर शिक्षा में सक्षम हो। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने नारी जाति को शिक्षा का अधिकार दिलाया। इसलिए आज इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के अभियान को केवल नारे तक ही सीमित न करें अपितु उस भावना को अपने परिवारों में आत्मसात् करें।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

समीक्षा वेदोक्त ज्योतिष एवं वेदार्थ

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा रचित 'वेदोक्त ज्योतिष एवं वेदार्थ' नामक ग्रन्थ पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती की वैदिक वाङ्मय पर गहरी पकड़ है। आपने-अपने निर्णय के पक्ष में जहाँ केवल एक प्रमाण की आवश्यकता हो वहां भी वैदिक वाङ्मय से कई-कई प्रमाण प्रस्तुत कर अपनी विद्वता का परिचय दिया है।

ग्रन्थ दो भागों में विभाजित है। पूर्वार्द्ध: और उत्तरार्द्ध:। पहले भाग में वैदिक मान्यता के पक्ष में 24 समुल्लास हैं और दूसरे भाग में फलित ज्योतिष पर 18 समुल्लासों में उसके असत्य और अवैज्ञानिक होने के आक्षेप लगाये हैं। फलित ज्योतिषियों से अपने पक्ष को सिद्ध करने हेतु कुछ प्रश्नों का उत्तर देने को कहा गया है। जिनका उत्तर देना फलित ज्योतिषियों के लिए असंभव है।

पूर्वार्द्ध के प्रथम समुल्लास: में बताया गया है कि मानव जीवन का परम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है। मोक्ष प्राप्ति बिना ज्ञान के संभव नहीं है। ज्ञान का मूलाधार वेद है अत: वेदाध्ययन मोक्ष प्राप्ति का मुख्य साधन है।

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमा-
दित्यवर्णं तमस: परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति
नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय।।
यजु. 31.18

सूर्य के समान प्रकाश स्वरूप, प्रकृति अथवा अज्ञानान्धकार से दूर विद्यमान इस महान् पुरूष को जानें। उसको जानकर ही मृत्यु आदि दु:खों से बचा जा सकता है।

फिर वैदिक परम्परा में ज्योतिष को वेद का चक्षुस्थानीय माना है।

फलित ज्योतिषी का कहना है कि ज्योतिष वह है जिससे भूत, वर्तमान् और भविष्यत् की बातों को जान लेते हैं। जिसके द्वारा किसी कार्य की सफलता के लिए मुहूर्त बताया जाता है। पंचाङ्ग निर्माण, तिथि आदि का जिसके द्वारा ज्ञान होता है। इसका उत्तर यह है कि पंचाङ्ग वही होता है जो वेद के प्रत्येक मंत्र के अर्थज्ञान में उपयोगी हो। मुहूर्त बतलाने वाले ग्रन्थ, भूत, वर्तमान और भविष्यत् की बाते बताने वाले ग्रन्थ अथवा काल को बताने वाले ग्रन्थ वेदाङ्ग नहीं हो सकते क्योंकि वेद मंत्रों के अर्थ जानने में उनका उपयोग नहीं हो सकता है। वास्तव में ज्योतियों को आधार बना कर रचा हुआ ग्रन्थ ज्योतिष कहलाता है। ज्योतिष शास्त्र जगत् का एवं जगत्कर्ता परमात्मा का बोध करता हुआ वेदार्थ बोध कराने से वेदाङ्ग है।

दूसरे समुल्लास : में बताया गया है कि ज्योतिष का अध्ययन क्यों करें?

ज्योतिष अध्ययन करने से निम्न प्रयोजन हैं-

1. ब्रह्म प्राप्ति-ज्योतिषा बाधते तम:। ऋ. 5.82.5

ज्योति के द्वारा अज्ञान दूर होता है। ज्योतियों की ज्योति परमात्मा को जानने एवं परमानन्द को प्राप्त करने के लिए ज्योतिष को पढ़ना चाहिए।

2. सृष्टि विज्ञान-कल्पनातीत सृष्टि का ज्ञान इसी शास्त्र से होता है।

3. नास्तिक्य निवारण-इस अचित्य, अप्रमेय, अनादि अनन्त विश्व का ज्ञान होने पर मानव की नास्तिकता दूर हो जाती है।

4. तत्व ज्ञान-वेद के अनुसार पिण्ड का अधिपति आत्मा है और ब्रह्माण्ड का अधिपति परमात्मा है। शेष प्रकृति है। सृष्टि का उपादान प्रकृति है। ज्योतिष के अध्ययन से यह तत्व ज्ञान हो जाता है। तत्वज्ञान मुक्ति में सहायक होता है।

5. अघमर्षण-जीवन में अघमर्षण करने अर्थात् निष्पाप होने के लिए ज्योतिष का अध्ययन करना चाहिए।

6. वेदार्थ ज्ञान-वेद का ज्ञान ज्योतिष के अनध्ययन से होने वाले अनर्थों पर विचार किया गया है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. वेदों के साथ अनर्थ-वेदों को ठीक से जानने के लिए ज्योतिष का गहन ज्ञान आवश्यक है। इसके अभाव में यदि वेद पर कुछ लिखेगें तो अनर्थ किये बिना नहीं रह सकते।

2. अन्धविश्वास-मकर संक्रान्ति के विषय में-22 दिसम्बर के दिन सूर्य उत्तरायण में प्रवेश करता है। उस दिन रात्रि का मान सर्वाधिक होता है तथा दूसरे दिन से रात्रि का मान धीरे-धीरे घटने लग जाता है। यह सूर्य का मकर राशि में संक्रमण है अत: यही पर्व का दिन है। इसी दिन मकर संक्रान्ति मनाना चाहिए किन्तु फलित ज्योतिषी मकर संक्रान्ति 14 जनवरी को मनाते हैं जो अज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

3. मोक्ष का कारण-फलित ज्योतिष के अनुसार उत्तरायण में मृत्यु होने पर जीवात्मा मुक्ति प्राप्त कर लेता है जो निरा अज्ञान है।

4. अद्वैतवाद की असत्यता-अद्वैतवाद वेदादि सत्यशास्त्रों के विरूद्ध है ज्योतिष इसे बताता है।

5. सृष्टि की उत्पत्ति का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कराने में भी ज्योतिष सहायक है। पुराणों में इस विषय में वेद विरूद्ध वर्णन हुआ है।

6. सृष्टि काल-वैदिक परम्परा के अनुसार सृष्टि को उत्पन्न हुए लगभग 2 अरब वर्ष हुए है। जबकि ईसाई सृष्टि की उत्पत्ति ईसा पूर्व 4004 वर्ष मानते हैं जो विज्ञान की मान्यता के भी विरूद्ध है।

7. विश्व का स्वरूप कल्पित-वेद विद्या शून्य लोगों ने मध्यकाल में अगोचर पदार्थों के विषय में मनमानी कल्पना की है।

8. पृथ्वी को स्थिर और चपटी मानना भी अज्ञान है। इसके आयतन के विषय में भी जो कुछ कहा है वह अज्ञान जनित ही है। पृथ्वी घूमती है इसे न मानना भी केवल पक्षपात ही है। वर्तमान में वैज्ञानिकों ने उपग्रहों में बैठकर पृथ्वी को घूमते हुए देख लिया है।

9. फलित ज्योतिषी गुरूत्वाकर्षण के विषय में कुछ नहीं जानते हैं। इसी प्रकार अन्य कई मान्यताएं हैं जो ज्योतिष के न जानने से बनी है।

चौथे समुल्लास में जगत् की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय पर विचार किया गया है। प्रकृति, जीव और परमात्मा को अनादि माना गया है और तर्क पूर्व प्रमाणों से इसे सिद्ध भी किया गया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यन
श्नन्नन्यो अभिचाक शीति।।
ऋ. 1.164.20

यह मंत्र त्रैतवाद को सिद्ध कर रहा है।

फिर पञ्चभूतों से बने लोक-लोकान्तरों के छ: विभाग हैं-नक्षत्र, गृह, उपग्रह, धूमकेतु, उल्का और नक्षत्रिय! नक्षत्र असंख्य हैं। नक्षत्र का अर्थ सूर्य है। पांचवें समुल्लास: में इन पर विचार हुआ है।

ग्रह-सूर्य (नक्षत्र) को आश्रित करके उसके चारों ओर निरन्तर भ्रमण करने वाले लोकों को ग्रह कहते है।

उपग्रह-जो ग्रहों के समीप रहकर ग्रहों एवं नक्षत्रों से प्रकाश और ऊर्जा आदि ग्रहण करते हुए ग्रहों की परिक्रमा करते हैं वे तारे ग्रह कहलाते हैं।

धूमकेतू-पुच्छल धुएं के समान अति दीर्घ पुच्छ से युक्त होकर सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले लोगों को धूमकेतु कहते हैं।

उल्काएं-रात्रि में अत्यन्त तीव्रता से प्रकाशित होकर वेग से आकर भूमि पर गिरने वाले पदार्थों को उल्का कहते हैं।

छठे समुल्लास-में ग्रहों की संख्या और नक्षत्रों के विषय में चर्चा है। वेद में वर्णन है कि सृष्टि में लाखों निहारिका मण्डल, नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह, उल्काएं आदि है और सभी चलायमान हैं। ध्रुवतारा भी स्थिर नहीं है वह भी चलायमान है। वास्तव में आकाश में कोई भी आकाशीय पिण्ड न तो स्थिर है और न स्थिर रह ही सकता है।

सातवें समुल्लास-में बताया गया है कि आकाश में स्थित सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, द्युलोक, सम्पूर्ण सौर मण्डल गोलाकार है। इतना ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व, आकाश, पृथ्वी का भ्रमण मार्ग, समस्त लोक-लोकान्तरों की कक्षाएं सत्व, रज, तम कण, परमाणु आदि सभी गोल हैं। यह सम्पूर्ण वर्णन विज्ञान के अनुकूल है।

आठवें समुल्लास-में भी यही बताया गया है कि नक्षत्रादि के भ्रमण कक्ष भी गोल है।

नवमें समुल्लास-में बताया गया है कि सूर्य सौर मण्डल के केन्द्र में होता है।

दसवें समुल्लास-में आकर्षण, अनुकर्षण पर विचार किया गया है। यह जगत् ईश्वर, जीव और प्रकृति का समूह है। ईश्वर और जीव चेतन

(शेष पृष्ठ 6 पर)

वैदिक कर्मफल व्यवस्था

ले.-कृष्ण चन्द्र गर्ग 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा

सुख दुख का कारण मनुष्य के कर्म (काम या कर्म) हैं, ग्रह नहीं। मनुष्य जैसा काम करता है वैसा ही फल पाता है। ऐसा काम जिससे किसी का भला हुआ हो उसके बदले में ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होता है और ऐसा काम जिससे किसी का बुरा हुआ हो उसके बदले में मनुष्य को दुख मिलता है। ईश्वर पूर्ण रूप से न्यायकारी है। वह किसी की सिफारिश नहीं मानता। वह रिश्वत नहीं लेता। उसका कोई ऐजेंट या पीर, पैगम्बर या अवतार नहीं है।

अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कामों का फल अलग-अलग हिसाब रहता है। ऐसा नहीं है कि एक अच्छा काम कर दिया और एक उतना ही बुरा काम कर दिया ओर वे बराबर होकर कट गए और हमें कोई फल न मिले। दोनों का अलग अलग फल भोगना पड़ता है। अच्छे और बुरे कामों के फलस्वरूप सुख और दुख साथ-साथ भी चल सकते हैं। कुछ अच्छे कामों का फल हम भोग रहे हैं, साथ ही कुछ बुरे कार्यों का फल भी भोग रहे हैं।

मनुष्य जन्म में किए कामों के अनुसार ही आगे का जन्म मिलता है। अगर बुरे काम की बजाए अच्छे काम ज्यादा हों तो अगला जन्म मनुष्य का ही मिलता है। अगर बुरे काम ज्यादा हों तो अगला जन्म कामों के अनुसार पशु, पक्षी, कीड़ा, मकौड़ा आदि कुछ भी हो सकता है। यह बात सही नहीं है कि चौरासी लाख योनियों में से होकर ही मनुष्य जन्म फिर से मिलता है। हमारे सामने ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जहां बच्चों को अपने पूर्व के जन्म का ज्ञान है और वे पूर्व जन्म में भी मनुष्य योनि में ही थे।

भाग्य या प्रारब्ध क्या है। मनुष्य जो भी अच्छा या बुरा काम करता है। उसके बदले में उसके अनुसार उसे जो फल मिलता है वही उसका भाग्य है। इस प्रकार अपना भाग्य मनुष्य खुद बनाता है, कोई और नहीं। कोई भी किसी दूसरे का भाग्य न बना सकता है और न ही बिगाड़ सकता है। किसान ने खेती करके जो फसल घर में लाकर रख ली वह उसका भाग्य है, उसकी अपनी मेहनत का फल।

किसी भी अच्छे या बुरे काम का फल शासन-प्रशासन भी दे सकता है। अगर शासन-प्रशासन न दे तो ईश्वर तो देता ही है। कोई भी कर्म बिना फल के नहीं रहता।

जैसे माता-पिता अपनी सन्तानों को बुरे कार्यों से हटाकर अच्छे कामों में लगाने की कोशिश करते हैं वैसे ही ईश्वर भी करता है। जब मनुष्य कोई बुरा काम करने लगता है तब उसे अन्दर से भय, शंका, लज्जा महसूस होती है और जब वह कोई अच्छा काम करने लगता है उसे आनन्द, उत्साह, अभय, निशंका महसूस होती है। ये दोनों प्रकार की भावनाएं ईश्वर की प्रेरणा होती हैं।

मनुष्य कुकर्म क्यों करता है। अविद्या अर्थात् मान लेना कि कुकर्म के फल से बचने का उपाय कर लेंगे तथा राग, द्वेष और लालच के कारण ही मनुष्य कुकर्म कर बैठता है।

अथर्ववेद (12-3-48)-कर्म का फल करने वाले को ही मिलता है। इसमें किसी और का सहारा नहीं होता, न मित्रों का साथ मिलता है। कर्म फल प्राप्ति में कमी या अधिकता नहीं होती। जिसने जैसा कर्म किया उसको वैसा ही और उतना ही फल मिलता है।

महाभारत में युद्ध की समाप्ति पर गन्धारी श्री कृष्ण से कहती है- निश्चय ही पूर्व जन्म में मैंने पाप कर्म किए हैं जो मैं अपने पुत्रों, पौत्रों और भाईयों को मरा हुआ देख रही हूँ।

महाभारत में ही शान्ति पर्व में कहा गया है-जैसे बछड़ा हजारों गऊओं के बीच में अपनी माँ के पास ही जाता है ऐसे ही कर्म फल कर्म के करने वाले के पास ही जाता है।

मनुस्मृति (4-240)-जीव अकेला ही जन्म और मरण को प्राप्त होता है। अकेला ही अच्छे कर्मों का फल सुख और बुरे कामों की फल दुख के रूप में भोगता है।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (प्रकृति 37-16)-करोड़ों कल्प बीत जाने पर भी बिना कर्म फल को भोगे उनसे छुटकारा नहीं मिल सकता।

चाणक्य नीति-किए हुए अच्छे और बुरे कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

गीता (5-15)-हमारे सुखों और दुखों के लिए परमात्मा उत्तरदायी नहीं है, बल्कि हमारे अच्छे और बुरे कर्म उत्तरदायी हैं। अज्ञानता के कारण हम अपने सुख दुख के लिए परमात्मा को उत्तरदायी ठहराते हैं, जबकि वह न हमारे पापों के लिए जिम्मेदार है और न ही पुण्यों के लिए जिम्मेदार है।

वाल्मीकि रामायण (युद्ध काण्ड 63-22)-रावण के मारे जाने के बाद जब हनुमान लंका में सीता को राम की विजय का समाचार सुनाने गए तब सीता ने हनुमान से कहा-मैंने यह सब दुख पूर्व जन्म में किए हुए कामों के कारण ही पाया है क्योंकि अपना किया हुआ ही भोगा जाता है।

वाल्मीकि रामायण (अरण्य काण्ड 35-17, 18, 19, 20) - सीताहरण के पश्चात् श्री राम सीता के वियोग में विलाप करते हुए कहते हैं-हे लक्ष्मण! मैं समझता हूँ इस सारी भूमि पर मेरे समान बुरे काम करने वाला पापी पुरुष और कोई नहीं है क्योंकि एक के पश्चात् एक दुखों की परम्परा मेरे हृदय और मन को चीर रही है। पूर्व जन्म में निश्चय ही मैंने एक के पश्चात् एक बहुत से पाप किए हैं। उन्हीं पापों का फल आज मुझे मिल रहा है। राज्य हाथ से छिन गया, अपने लोग से वियोग हो गया, पिता जी परलोक सिधार गए, माता जी से बिछोड़ा हो गया। इन घटनाओं को याद करके मेरा हृदय शोक से भर जाता है। हे लक्ष्मण, ये सारे दुख इस रमणीक वन में आने पर शान्त हो गए थे। परन्तु आज सीता के वियोग से वे सभी भूले हुए दुख उसी प्रकार फिर से ताजा हो गए हैं जैसे लकड़ी डालने से आग जल उठती है।

पश्चाताप (मनुस्मृति 11-230)- पाप कर्म होने पर उस पर पश्चाताप करके मनुष्य उस पाप भावना से छूट जाता है। फिर वह पाप कर्म नहीं करता। यही पश्चाताप का फल है। जो कर चुका उसका फल तो भोगना ही पड़ेगा। किए कर्म के फल से बचने का शास्त्रों में कहीं कोई उपाय नहीं बताया। पाप का फल अवश्य मिलेगा यह सोचकर मनुष्य को पाप कर्म नहीं करना चाहिए।

कुकर्म से बचने के उपाय-अपने आप को ईश्वर के साथ जोड़ने से मनुष्य पाप कर्म से बच सकता है। यह जानकर कि ईश्वर हर समय मेरे साथ है, मेरे सभी कामों को देखता है तथा उसके अनुसार मुझे फल भी देता है मनुष्य दुष्कर्म से बच सकता है।

महाभारत-धर्म का सर्वस्व जानना चाहते हो तो सुनो। दूसरों का जो व्यवहार आपको अपने प्रतिकूल (विरुद्ध) लगता है अर्थात् दूसरों का जो व्यवहार आपको पसन्द नहीं वैसा व्यवहार आप दूसरों के साथ मत करो।

जैसे अग्नि अपने पास आई लकड़ी को जला देती है ऐसे ही वेद का ज्ञान मनुष्य में पाप की भावना को जला देता है अर्थात् वेद के स्वाध्याय से मनुष्य में पापकर्म करने की भावना समाप्त हो जाती है।

यजुर्वेद (40,3)-जो मनुष्य अपनी आत्मा का हनन करते हैं अर्थात् मन में और जानते हैं, वाणी से और बोलते हैं और करते कुछ ओर हैं, वे ही मनुष्य असुर (दैत्य, राक्षस, पिशाच आदि) हैं। वे कभी भी आनन्द को प्राप्त नहीं करते। जो आत्मा, मन, वाणी और कर्म से कपट रहित एक सा आचरण करते हैं वे ही देवता हैं, वे इस लोक और परलोक में सुख भोगते हैं।

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयान:।-सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं। सत्य पर चलकर ही मनुष्य देवता बनता है। ऋषि लोग सत्य पर चलकर ही परमात्मा को पाकर आनन्द प्राप्त करते हैं।

ईश्वर की न्याय व्यवस्था में जो किसी का जितना भला करेगा उसको उतना ही सुख मिलेगा और जितना किसी का बुरा करेगा उतना ही उसे दुख मिलेगा। इस प्रकार सत्य और पक्षपात रहित न्याय का आचरण तथा परोपकार के कार्य ही सुख रूप फल देने वाले हैं।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

पृष्ठ 4 का शेष-समीक्षा वेदोक्त

है, प्रकृति जड़ है। ईश्वर जीव में कारण प्रकृति में और कार्य जगत् में बाहर, भीतर सर्वत्र व्याप्त है। वह जगत् के बाहर भी है। ईश्वर जीव और जगत् को धारण करता है। ये दोनों ईश्वर द्वारा धारित उसी में रहते हैं। ईश्वर इनका आकर्षण करता है। जीव एवं प्रकृति में भी आकर्षण है। यजुर्वेद अध्ययन 34 मंत्र संख्या 31 में कहा गया है-

आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

अर्थ-परमात्मा सब लोगों के साथ आकर्षण गुण रहित वर्तमान है। अनन्त बल से, आनन्द पूर्वक क्रीड़ा एवं व्यवहार का साधन ज्ञान से, सत्य विज्ञान को, ज्ञानियों को मोक्ष को, मनुष्यों को प्राप्त कराता हुआ, परमेश्वर सब लोकों को धारण करता है, सब लोकों को प्रकाशित कर सबको जानता है।

यदा ते मारूती र्विशस्तुभ्यमिन्द्र नि येमिरे।

अदित्ते विश्वा भुवनानि येभिरे।। **ऋ. 8.12.29**

अर्थ-हे परमैश्वर्यवान् भगवन्। जिस समस्त तेरे मरूत से सम्बद्ध, लोक-लोकान्तरों तेरे आकर्षण आदि नियमों में स्थिर हो जाते हैं, उसके पश्चात् समस्त लोक व्यवस्थित हो जाते हैं।

ग्यारहवें समुल्लास-में प्रकाश्य प्रकाशक विषय पर विचार किया गया है। वेदों के अनुसार इस जगत् में दो प्रकार के लोक हैं। 1. स्वत: ज्योति और परत: ज्योति अर्थात् स्वयं प्रकाशक तथा अन्यों के प्रकाश से प्रकाशित।

बारहवें समुल्लास-में विविध मान यथा कालमान, क्षेत्रमान, दूरमान और भार मान। इसी समुल्लास: में यह भी सिद्ध किया गया है कि वर्तमान में सृष्टि को उत्पन्न हुए कितना समय व्यतीत हुआ है। वैदिक वाङ्मय में सृष्टि की कुल आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष मानी गई है। ब्रह्मयुग के अनुसार युग चार है। कलियुग, द्वापर युग, त्रेतायुग और सत युग। कलियुग में 432000 वर्ष में इसमें 36000 वर्ष सन्ध्या आदि में और 36000 वर्ष सन्ध्यांस अन्त में मिले होते हैं। इसी प्रकार द्वापर में कलियुग से दोगुने 864000 वर्ष जिसमें 72000 वर्ष सन्ध्या के आदि में और 72000 वर्ष अन्त में सन्ध्यास मिले होते हैं। त्रेतायुग में 1296000 वर्ष जिसमें 108000 वर्ष सन्ध्या आदि में और 108000 वर्ष सन्ध्यांस अन्त में मिले होते हैं। सत युग में 1728000 वर्ष जिनमें 144000 वर्ष सन्ध्या आदि में और 144000 वर्ष सन्ध्यांस अन्त में मिले हैं।

एक चतुर्युगी में 432000 +8640000+1296000 + 1728000 =4320000 वर्ष होते हैं। 71 चतुर्युगों अर्थात् 4320000 × 71 = 306720000 वर्ष का एक मन्वन्तर होता है। एक ब्राह्म दिन में 14 मन्वन्तर = 4320000×14 = 4294080000 वर्ष एक ब्राह्म दिन= 1000 चतुर्युगी=4320000×1000 =4320000000 वर्ष स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार, 'ते चैकस्मिनन्ब्राह्म दिन 14 चतुर्दश भुक्त भोगा भवन्ति। एक सहस्त्रं चतुर्युगानि ब्राह्मदिनस्य परिमाणं भवति। अर्थात् इनमें 14 मनवन्तरों प्राणियों के 'भुक्त भोगा काल है तथा 1000 चतुर्युग एक ब्राह्म दिन का मान है। प्रश्न होता है कि 4320000000-4294080000 = 25920000 वर्ष का क्या होगा ?'

स्वामी दयानन्द के अनुसार तो यह सृष्टि उत्पत्ति का काल है। कुछ दूसरे लोगों ने इस काल के 15 भाग किये तो 1728000 वर्ष आए तो उनको यह उचित लगा कि प्रत्येक मन्वन्तर के पूर्व तथा सृष्टि के अन्त में इस राशि को सन्धि काल के नाम से जोड़ दिया जाए। परन्तु किसी भी वैदिक ग्रन्थ में इसका समर्थन नहीं है। मनु स्मृति द्वारा की गई काल गणना में सृष्टि की आयु में सन्ध्या एवं सन्ध्यांस काल तो पूर्व में ही जुड़ा हुआ है। उन्होंने मन्वन्तर के पूर्व 1728000 वर्ष या एक सत्य युग और जोड़ने को कहीं नहीं कहा है फिर क्या प्रत्येक मन्वन्तर के प्रारम्भ में दो सत्ययुग होंगे ? यह विचार ही चौंकाने वाला है। यदि यह कहें कि मनुस्मृति का विषय काल गणना करना नहीं है तो यह अत्यन्त हास्यास्पद होगा। सृष्टि उत्पत्ति तो मनुस्मृति का मुख्य विषय है। फिर यह कहना कि संकल्प मंत्र सन्धिकाल का समर्थन करता है नितान्त असत्य है। यह मानना भी गहरी अविद्या का सूचक है कि 25920000 वर्ष में सृष्टि उत्पत्ति नहीं हो सकती।

(क्रमश)

पृष्ठ 2 का शेष-वैदिक धर्म ही मानव धर्म है

के अनध्याय, आचार के पतन, कर्तव्यकर्मों में आलस्य और अन्न के दोष से ब्राह्मण पतित हो जाता है। मनु की व्यवस्था में यदि ब्राह्मण वाणी से पाप करे, तो शूद्र से चार गुना और शरीर से पाप करे तो आठ या सोलह गुना दण्ड होना चाहिये। पहले शिक्षा ब्राह्मण के अधीन थी और वह नि:शुल्क थी। वेतनभोगी ब्राह्मण निन्दनीय था। ब्राह्मण का शास्त्रज्ञान केवल वाग्विलास या वाक्युद्ध के लिये नहीं होता था, वरन् मानव जाति के संस्कार करने, व्यवहार को शुद्ध करने, समाज के कल्याण, सौमनस्य, शान्ति, तुष्टि और पुष्टि के लिये था। शुक्राचार्य का कथन है कि-

ब्राह्मणं तु स्वधर्मस्थम् दृष्ट्वा विभ्यति वै जना:।

नान्यथा क्षत्रियाद्यास्तु तस्मात् विप्र: तपश्चरेत्।।

तथा महा० का वचन है-(तपोविद्याच विप्रस्य निश्रेयसकंर परम् तपसा किल्विषं हन्ति विद्यया-ऽमृतंमश्नुते)

अर्थात्-ब्राह्मण यदि अपने धर्म के प्रति सचेत रहता है तो दूसरे आदि वर्णस्थ लोग भी भयभीत होकर मर्यादा का पालन करते हैं। अत: विप्र तपस्वी बना रहे। विप्र राजा को भी सन्मार्ग दिखाता है-(प्रजानां तु नृप: स्वामी, यज्ञस्वामी पुरोहित:)।

क्षत्रिय राजा दण्ड का संचालन करे, किन्तु मनमानी नहीं। राजा वेदवित् हो। (सर्वलोका धिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।) राज्य का संचालन दण्ड के बिना नहीं हो सकता। (दण्ड: शास्ति प्रजा: सर्वा दण्ड एवाभि रक्षति। दण्ड: सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधा:।।)

(क्रमश)

वेदवाणी

तेरी लीला

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदान:।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध।।

-ऋ० १।१६५।९

ऋषि:-**अगस्त्य:**।। देवता-**इन्द्र:**।। छन्द:-**त्रिष्टुप्**।।

विनय-हे सर्वैश्वर्ययालिन्! मैं आज देख रहा हूँ कि इस विश्व का सब-कुछ-छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा-तेरे हिलाये हिल रहा है। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो तेरी प्रेरणा से प्रेरित नहीं हो रही हो। इस ब्रह्माण्ड-सागर की क्षुद्र-से-क्षुद्र और महान्-से-महान् सब लहरें तू ही पैदा कर रहा है। जगत् के अनन्त परमाणुओं में जो एक-एक परमाणु प्रतिक्षण गतिशील है, चींटी से कुंजर तक जो सब प्राणी चेष्टा कर रहे हैं, मनुष्य के वैयक्तिक जीवन और मनुष्य-संघ के समष्टि जीवन में जो नित्य छोटे-बड़े परिवर्तन हो रहे हैं, भूकम्प, वर्षा, वायु, अग्नि, ऋतु आदि रूप से जो आधिदैविक जगत् निरन्तर बदल रहा है-यह एक जगत् क्या, ऐसे-ऐसे जो कोटि-कोटि अनन्त जगत्, जो असंख्यात सूर्य और पृथिवियाँ, इस महाकाश में चक्कर लगा रहे हैं-ये सब-के-सब, तेरी ही दी हुई गति से, तेरी ही प्रेरणा से चल रहे हैं। तू अपनी पूर्ण ज्ञानमयी ठीक-ठीक गति देकर इस सब संसार को नचा रहा है। हम मनुष्य क्या, बड़े-से-बड़े ज्ञानी देव भी तेरे असीम ज्ञान का पार नहीं पा सकते। ये सब तेरे ज्ञान को असीम-अनन्त कह-कह कर अपनी अज्ञानता को ही प्रकाशित करते हैं। ज्यों-ज्यों हमारा ज्ञान बढ़ता जाता है त्यों-ज्यों पता लगता जाता है कि तू कितना-कितना महान् है! हे महान्! हे परम महान्!! तेरी महत्ता के आकाश का अन्त हमारा कल्पना-पक्षी अपनी ऊँची-से-ऊँची उड़ान से भी नहीं पा सकता; वह हार मानकर, थक-थकाकर, शान्त हो जाता है। तब हम तेरी महत्ता को अनन्त मानकर और तेरी लीला को अगम्य कहकर चुप हो जाते हैं। इतना ही कह सकते हैं कि इस जगत् में जो कुछ पैदा हुआ है, हो रहा है या होगा, उनमें से किसी में भी ऐसी शक्ति नहीं है जो तेरी लीला को समझ सके, जो तेरे द्वारा की जाने वाली या की जा रही लीला के किसी ओर-छोर को पा सके। जो तेरी लीला की अधिक-से-अधिक सच्ची, नज़दीकी और पूरी ख़बर लाता है तो वह यही ख़बर लाता है कि तेरी लीला अगम्य है, तेरी लीला अगम्य है।

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम गढ़ी आश्रम उधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक ८ से १५ अप्रैल-२०१८ तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू काश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड तथा उड़िसा आदि राज्यों से आए हुए लगभग एक सौ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में लगभग सोलह वानप्रस्थी व संन्यासी भी पधारे। शिविर में अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया गया। इस अवसर पर मां सत्यप्रियायति जी के तथा अन्य गायक-गायिकाओं के भजन हुए। महात्मा जी के सारगर्भित वैदिक प्रवचन हुए। वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी के उपनिषद् एवं सन्ध्या पर हुए प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली रहे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद परायण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। सेवानिवृत्त, मुख्य सचिव श्री कुण्डल, जम्मू काश्मीर विधान सभा के अध्यक्ष श्री कवीन्द्र जी तथा स्थानीय विधायक श्री पवन आदि की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान।

मेधावी छात्राओं को सम्मानित किया गया

आर्य गर्ल्ज़ सी० सेकै० स्कूल, बठिण्डा के प्रांगण में दिनाँक 13-4-2018 दिन शुक्रवार को वैशाखी के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ करवाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल, उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग, मैनेजर श्री निहाल चन्द सचदेवा, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता, समूह स्टाफ एवम बच्चे शामिल हुए। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने सभी को वैशाखी की शुभकामनाएँ दी तथा बच्चों को वैशाखी के महत्व के बारे में बताया। कक्षा पहली से नौंवी, ग्यारहवीं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। रिटायर्ड अध्यापिका श्रीमती पुष्पा जी तथा श्री भरत हांडा पिछले कई वर्षों से पढ़ाई में अब्बल आने वाले बच्चों को अपनी यूनिफार्म, स्टेशनरी खरीदने के लिए आर्थिक मदद प्रदान करते हैं। इस साल श्री भरत हांडा जी ने आठवीं कक्षा में प्रथम आने वाली छात्रा पूजा को 2500/- रूपये नकद राशि इनाम के रूप में प्रदान की। स्कूल मैनेजमैंट ने जरूरतमंद बच्चों की समय-समय पर सहायता करने के लिए मैडम पुष्पा जी तथा श्री भरत हांडा जी का आभार प्रकट किया। **-प्रिंसिपल**

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

जन्मदिवस की सूचना व आर्य महासम्मेलन

मेरे प्रिय आत्मीयजनों बहुत समय के बाद पत्र द्वारा आप लोगों से सम्पर्क साध रहा हूँ। सुमेधामन्थन को जब से मैं आप लोगों तक पहुंचाने लगा, तब से पत्रों का सिलसिला बन्द है, प्रपत्र के रूप में सुमेधामन्थन द्वारा ही आप सभी से सम्पर्क साध रहा था। इस मास का सुमेधामन्थन भी आप लोगों तक पहुंच चुका होगा। उससे आप लोगों को जानकारी मिल गयी होगी कि 4-5-6 मई को पूज्य स्वामी जी महाराज का जन्मदिन हम लोग समारोहपूर्वक मना रहे हैं। निमन्त्रण पत्र भेजने में देरी हो जाएगी, क्योंकि उन बहुत से लोगों की स्वीकृति आनी अभी शेष है जिनके नाम इस निमन्त्रण पत्र में अंकित होने हैं। प्रियजनो- वेदों, शास्त्रों, नीति व स्मृति ग्रन्थों में अपने पूज्यों, माननीयों, स्माननीयों के प्रति अनुजीवियों, अनुयायियों, सुपुत्रों व सुशिष्यों के कर्तव्यों के विषय में जब पढ़ता हूँ। नीति ग्रन्थों, इतिहास, उपनिषादि में अपने पूज्यों के लिए किए गए त्याग व समर्पण की कथा, कहानियों को पढ़ता हूँ, तो हृदय में बहुत कुछ कर गुजरने की उत्ताल तरंगे उठने लगती हैं और फिर समर्पित हो जाता हूँ उन कर्मों को करने के लिए जिनकी ओर शास्त्र इशारा करते हैं। वे दिव्यात्माऐं बराबर प्रेरणाऐं देती रहती हैं। महाभारतकार कहता है:-

अद्येव कुर्वीत यद् श्रेयो मात्वाकालो अध्यगाद्
अकृतेष्वेव कार्येषु मृत्यु त्वा प्रकर्षति।

मन में जिस श्रेयकर्म को करने की तमन्ना जगती है, उसे आज ही कर डालो। कल पर उसे मत छोड़ो। न जाने कब काल दस्तक दे दें, और आधे अधूरे मन में ही धरे कार्यों को किए बिना ही मृत्यु घसीट कर ले जाएगी। इसी का परिणाम है कि मन में जगी पूज्य चरणों के जन्मदिन को मनाने की तमन्ना को अमलीजामा पहनाने जा रहा हूँ। वह भी आर्य महासम्मेलन के साथ मनाने चला हूँ। इसमें व्यय भी काफी होगा। बाहर से भी लोग आऐंगे, स्थानीय लोग भी होंगे। जिनके खाने-पीने, आवासादि की व्यवस्था भी करनी है। खाने के लिए विद्यालय के छात्र, विद्यालय का स्टाफ भी अलग से होगा, जो कि सब मिलाकर सात सौ है। यज्ञ पर, पण्डाल पर, साज-सजा पर, साधु-सन्तों, विद्वानों की दक्षिणादि और भी कई मुद्दों पर पर्याप्त अन्न धन लगेगा। महासम्मेलन करना है तो वह भव्य ही होना चाहिए क्योंकि पूज्य स्वामी जी के सभी काम भव्य ही हुआ करते थे। उनके जन्मदिन का यह कार्यक्रम भी भव्य हो, बस इसी के लिए भरपूर प्रयास कर रहा हूँ। **आर्यप्रतिनिधि सभा हि० प्र०** को सहभागिता निभाने के लिए निवेदित कर रखा है। **माननीय राज्यपाल महोदय हि० प्र०** को भी आमन्त्रित किया हुआ है और भी प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क साध रहे हैं। पूज्य चरणों व दिव्यात्माओं का आशीर्वाद तो अपरोक्ष रूप से साथ है ही, **पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज** भी हमें सहारा दिए हुए हैं, और आप लोग भी हमेशा की तरह बल्कि उससे भी अधिक रूप से हमें सहारा व संबल दोगे, यह पूर्ण विश्वास है। समय बहुत कम है, आगे निमन्त्रण पत्र मिले या ना मिले उसकी प्रतीक्षा किए बिना सहारा व सहयोग के लिए हाथ उठाकर अपने प्रियपात्र के उत्साहवर्धन के लिए, उसके प्रयास को सफल करने के लिए, इष्ट, मित्र, बन्धु-बान्धुओं के साथ आप अवश्य पधारोगे, यह हमें पूरा विश्वास है। 4 मई को नगर में भव्य शोभा यात्रा भी निकाली जाएगी। इससे पहले यज्ञ व सत्संग के साथ सम्मेलन का उद्घाटन माननीय राज्यपाल हि० प्र० द्वारा किया जाएगा। इस सब के लिए पूरी तैयारी से आना, आपकी राह में आंखे बिछाए हम आपकी प्रतीक्षा करेंगे।

-आचार्य महावीर सिंह
दयानन्द मठ चम्बा हि० प्र०

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में 1975 में स्थापित महर्षि दयानन्द चेयर को संस्कृत चेयर में विलय करने के विरोध में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में 16 अप्रैल 2018 को पंजाब की समस्त आर्य समाजों द्वारा जिलाधीशों को ज्ञापन पत्र दिये गये। इसमें से कुछ आर्य समाजों के चित्र।

आर्य समाज मंदिर फिरोजपुर छावनी के सदस्य श्री मनोज आर्य जी के नेतृत्व में जिलाधीश फिरोजपुर को ज्ञापन पत्र देते हुये।

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के सदस्य श्री राकेश मेहरा जी के नेतृत्व में जिलाधीश अमृतसर को ज्ञापन पत्र देते हुये।

आर्य समाज औहरी चौक बटाला के सदस्य श्री प्रविन्द्र चौधरी के नेतृत्व में जिलाधीश बटाला को ज्ञापन पत्र देते हुये।

स्त्री आर्य समाज गुरुकुल विभाग गुरदासपुर के सदस्य श्रीमती ज्योति नंदा के नेतृत्व में राजस्व अधिकारी गुरदासपुर को ज्ञापन पत्र देते हुये।

स्त्री आर्य समाज बरनाला के सदस्य जिलाधीश बरनाला को ज्ञापन पत्र देते हुये।

आर्य समाज फरीदकोट के मंत्री श्री सतीश कुमार शर्मा व श्री बलदेव राज एडवोकेट और आर्य समाज कोटकपूरा के मंत्री श्री ललित बजाज जी जिला अधिकारी श्री राजीव पराशर को ज्ञापन पत्र सौंपते हुये।

फिरोजपुर में आर्य समाज चौंक का भव्य उद्घाटन

फिरोजपुर छावनी का ऐतिहासिक स्थान जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा 1877 में स्थापित आर्य अनाथालय एवं डी.ए.वी. गर्ल्ज स्कूल और आर्य समाज जोकि स्वामी जी की देन है, जब वे 1877 में फिरोजपुर पधारे थे। इसी पावन धरती पर आज 23 अप्रैल 2018 को आर्य समाज चौंक का भव्य उद्घाटन श्री विवेक मल्होत्रा आई टी ओ फिरोजपुर के कर कमलों द्वारा किया गया। आर्य समाज चौंक के निर्माण का श्रेय फिरोजपुर के आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी के प्रधान श्री विजय आनन्द एवं महामंत्री श्री मनोज आर्य जी के परम योगदान से हुआ। इस भव्य चौक में जो हवन कुंड का दृश्य दिखाया गया है वह अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर है। यह चौक फिरोजपुर में बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, छावनी और बस्ती टैंकावाली को जोड़ता है। चौंक के उद्घाटन में आर्य अनाथालय के बच्चों द्वारा स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्र एवं ऋषि दयानन्द जी का सुन्दर भजन प्रस्तुत किया गया। इस समारोह में आर्य अनाथालय के प्रबन्धक डा. सतनाम कौर, आर्य समाज फिरोजपुर शहर के प्रधान श्री सतीश शर्मा, डा. के.सी. अरोडा, श्री गगनदीप, रिजन चेयरमैन लायंस क्लब दिल्ली, श्री इन्द्रजीत भाटिया, श्री विपिन धवन, प्रिं.डी.ए.वी. कालेज फार वूमैन, प्रिं. डी.डी.वी. डी.ए.वी. सै.पब्लिक स्कूल, श्री सुरेन्द्र शर्मा मंत्री बस्ती टैंकावाली, एवं डा. डी.आर. गोयल विशेष रूप से सम्मिलित हुये। समारोह का अंत आर्य अनाथालय द्वारा आयोजित जलपान से हुआ।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।